॥ श्री ॥

रतनां हमीररी वार्ता

मारवाड़ी भाषा में एक रोचक
बात

प्रकाशक
आसोपा पण्डित बलदेवात्मज
पण्डित रामकर्ण—श्यामकर्ण

निज प्रताप प्रेस में
मुद्रित

कीमत ।)   सम्वत १९९०
(जोधपुर राजपूताना)

श्रीगणेशाय नमः ॥

अथ रतनांहम्मीरकी बात लिख्यते ॥

दोहा ॥

कुसमतणां सर पांच कर, जग जिण लीधो जीत॥
तिणरो सुमरण कर तवां, रसग्रंथांरी रीत ॥१॥
विण दीठां मारग विषम, किणविध जाणैं कोय॥
जिण रसरी जाणैं जिको, हिय तिण लागी होय॥२॥
गिनका ओषध जिम गिणैं, जवर पणैं श्रम जेम॥
निज तिय कर जिम निरखजै, परतिय केवल प्रेम॥३॥
जात पांत कुळरो जठै, न रहण पावै नेम ॥
रहै निरंतर येक रँग, परपख सोई प्रेम॥ ४ ॥
गुण अवगुण सुख दुख गिणयां, कसर न उपजै केंम॥
रंग एक जिणमें रहे, परपख सोई प्रेम ॥ ५ ॥

चाख जठा लग चोपड़ी, पछै दिखावै पीठ ॥
उणनूं आवत आपमैं, नरकहु लेवै नीठ ॥ ६ ॥
मुतलब मायामैं मगन, जिणरो नकोज मांन ।
हित द्रिढ किणसूंही हुवा, सरगुण भक्त समांन ॥७॥

(वात)

तिण समै सरांमैं ज्यूं मान सरोवर, तरां ज्यूं कलपतरोवर ; खगांमैं ज्यूं राजहंस, नगां ज्यूं भोम ग्रंस ; नसांमैं ज्यूं नेहरो नसो, रसां ज्यूं सिणगार रसरो ठसो ; तुरंगामैं ज्यूं सूरजरो तुरंग, दुरगांमैं इण भांत चन्द्रगढ दुरंग ॥

दोहा ॥

बहुक्रोड़ीधजरा बिरद, लियां महाजन लोक ॥
बसै अडर वैवार उण, झोक चन्द्रगढ झोक॥८
खावण खरचण नित खरच, हुकम हजारां रोक
एक एक घर ऊपड़ै, झोक चन्द्रगढ झोक ॥६॥
जिणपुर रूपांणी जिके, पखपिंडां पूराह ॥
कसर नहीं लागी कदे, सतबायक सूराह ॥१०॥
त्यांमैं हीरानँद तिको, तीख लियां बडतोल ॥

जनमी जिण पुत्री जिका, अद्भुत रतन अमोल।११।
प्यारी राखै पुत्रसौं, झाझा कर जतनांह ॥
तीखी रतनां तेज तिण, नाम कहै रतनांह ॥१२॥
बधती राई तिल वधै, तिल वधती जव तेण ॥
बरसां नव नवला वणी, अजब सिताबी एण।१३।
तीर पहूंती नाव तिम, सिसुता जोबन सार ॥
चित उतरण अर चढणारी, हलबल हुई हकार।१४।

सोरठा ॥

सिसुता जल सुसियाह,जिण जोबन रवि जेठरै॥
ऊंचा ऊसासियाह, अद्भुत उरज उरस्थली ।१५।

दोहा ॥

उर उकसाणां ऊपरै, सखि हँसपट साझेह ॥
मिटी विथारी संक मन, लोयण अत लाजेह।१६।
सुघड़ापणौ सुहांवणी, रस मूरत रँग रूप ॥
काम तियासौं पण क्युँहिक, तिणरी छटा अनूप।१७

(वात)

चौसठ कळारी जाण, इंद्र परीरै अहनाण; सरूपरै भार भरियो नाजक अंग, जिण आगै

काँइ केसर नैं कंचनरो रंग: नारेळ जिसा सीस पर केसांरो भार, तिके जाणैं तंमराहीज तार ; जिण रा मुखरी ओपमा तो पूर्णचंद्रमाही न पावै, कहां कठातांई दीठांईज वण आवै; नैण जिके तो मृग राहीज नैण, वैण जिके कोयलराहीज वैण, धनुष ज्यूं भुहांरांरी खंच, नाक जाणै सुवारी चंच, अधर प्रवाल जिसा वणिया, दांत जाणैं हीरारी कणि यां, बांह तो चंपारी डाल, हाथ पग जिके कमल सूंही सुखमाल, जिका हालती थकी लजावै हंसरी गतनैं, जिणारा रूप गुणांरी ओपमा रंभा अर रतनैं, और ही इणनूं यां ओपमां किसड़ी, आतो करतार हाथां घड़ी होय जिसड़ी, इतरे तो इणरा व्याव सारू सगपण साधियो, चित्रंगढरो फूलांणी इंद्रभाण जिणरा बेटा लिखमीदासरै. डोरो बांधियो, अठी इण मांढो छायो, उठीऊं जान वणायनैं आयो, दोनूं अपार द्रव्यरा धणी, कोड़ पातांही न खावै कणी, जोड़ सारीसी वणी, उमदाई दोनांई रै घणी ॥

सोरठा ।

जिसड़ी जीनत जान, सांभळो तिसड़ो सरस ॥
सभ्भिया दोउ समान, तुरियां कानोती तहीं।१८।

दोहा ॥

कंथ सुरड़रो कांकरो, रतनां तिका तरन्न ।
विधनांरी रचना बडी, जिणरो न क्यूं जतन्न।१९।

(वात)

हमें जांननूं भात पहरावणी दे विदा दीनी, सात सहेली नैं दस दासी इणांरै साथे कीनी, चित्रंगढ पोहोंता पण आतो घणी उदास रहै, सहलियां नूं ही दिलरी न कहै, देखापामैं तो पीहररी ओळूं जाणी पड़े है, पण घटमैं तो और ही घाट घड़े है॥ इतेरे एक चितेरा रूपारी बेटी हीरां आई, जिण जोतदान खोल तसवीरां दिखाई, तिणमैं एक तसबीर इणरै मनमांनी,. आ बार बार देखे उण कांनी, उण वेळा इसी फबी, जांणै सबी देख हुई आपही सबी, तद उण कही म्हारो बाप सूरजगढसूं हमार आयो है, सूं आ तसबीर रावळजीरी बेटी चिलखेखारा बरी उतार लायो है. तिण समैं सूरज

गढमैं राव दलपत राज करै है, सीस पर छत्र धरै ह, तिको बडै विस्तार, इंद्र अवतार, जिणसूं सारा भूप थरहरे, डंड भरे, डरता रहै, हुकमरा आधीन साधन करता रहै, तिणरै कँवर हम्मीर तिको वाधियो दिन तारीक, जिणरा खत मूछांरी स्याही जाणैं पोलाद खासरो जवाहर बारीक, आजानबाह, पोरस अथाह, दीवा सूंलाय, बडी वलाय, रिझवारां रिझवार, कँवरां सिणगार, तीख चोखरो राखणहार, रसविलासरो चाखणहार ॥

दोहा ॥

जातो आहेड़ां जठै, तीख करण तातोह ।
रँगरातो निस दिन रहै, मद जोबन मातोह।२०।
मुखऊठंती मोसरां, मद मगजां मंढियो ॥
पाटी बीरतरी पढै, चित चाळा चढियो। २१ ।

(वात)

कँवर हम्मीर कनैं कँवरांरो साथ तिके उदमादां करता थका, आकाशनूं बाथ भरता थका; अलबेलिया वीभलिया छैल, जिणां आगै न चाले किणीरा फैल, एकसूं एक आ

गे, जिणांनूं ओपमां किसी लागै, इसा दीसै कमरां कसिया, कालीरा कुंभ किनां रंभारा रसिया, रिणरा रिझवार सतीरा नारेलसा, कँवारी घड़ांरा भेळण हार बाकारिया सेरसा, रजपूतवटरा सभावां कछिया कँवर, मदछकिया अलबेला आलीजा भँवर॥

दोहा ॥

अड़ै भुजा असमांनमैं, घड़ै अवीढा घाट ।
रिम नटिया रिणसूं रहै,थटिया लख अै थाट२२

सोरठा॥

हदां विहद हम्मीर, प्रितपाळण रजबटपणो ।
तिसड़ो ही तिण तीर,तिको साथ कँवरांतणो।२३।

(बात)

इतरै कँवररा व्याहसारू चित्रगढरा रावळ लखपतरी बेटी चित्रलेखारो टीको आयो, सो इणां पिण बडा उछाहथी नारेळ लगन वधायो. हमैं जानरी तयारी कीजैहै, अनेकां रीझां मोजां दीजै है. सारोई साथ केसरिया कसूमल किया, जलूसरा साज साराई साथे लिया, वडा वडा किसव्यांरा ताय-

फा लारै है, तिके रागरंग उचार ह. साथम अम-लांरी मनुहारां करैहै, आसुवारां पण प्याला भरै है. इणतरै हगाम करता वहैहै, तीखचोख राखणरी वातां कहैहै. इतरे वधाईदारां रावळ लखपतनूं वधाई दीवी, तिणां मनमांनी निवाजसां लीवी. उठी रावळ नैं अठी राव, दोऊं तरफां सारीसो प्रभाव. जिणसमैरा मिलापरी नैं जलूसरी तारीफ एक जीभसूं किणतरै कहीजै, जो हजार जीभ होयतो थाक थाक रहीजै. दुसाखा नैं महताबांरो प्रकास, जिको जाणैं भास्कररोहीज भास. हवायां असमानमैं छूटैहै, जिके जाणै ताराहीज टूटै है. जिणां ऊपर पैजां मरीजै है, केई जीतीजैहै नैं केई हारीजै है. इणतरै घणा उछाहथी कँवर हम्मीर परणियो, तिणरो सुजस कवेसुरां गुणरूपगांमैं वरणियो. दोऊं तरफां धन खरचणरो प्रमाण किसो, और इणांनूं पूगै कोण इसो. हमैं घणां रसरजावंधीसूं जांन बिदा होयर बारै चंपाबागनूं आवै है, इतरै इणाहीज टांकड़ैं रतनां तिका पण पीहरनूं जावै है. सो उठै चंपाबागमैं

भीड़भंजण जोतलिंग सिव विराजै है, जिणरो दरसण कीधां संकट भीड़ भाजै है. आ तठे सनमुख ऊभी ध्यांन धरै है, गुणानुवाद करै है. अबै अठै सनेहरा बीज वहसी, अखियात रहसी. तिणसमै कँवर पिण दरसणनूं आयो जिणरै मुख नूर बरसै है, आगे आ तिका फांनूसरा दीपक ज्यूं दरसै है. सो इणां रै देखादेखी तो हुई मोड़ी, पण लेखै प्रमाण लगनतो पहलांहीज दोड़ी. सु रतनां सहेल्यांसूं बोली, अजे दिलरी न खोली, कहियां मरदांमैं आपणी लाज रहण न पावसी, आपां ऊपरलै खंड चालौ इ-तरै औ दरसण कर पराजावसी. तरै एक चतरू नांवै दासी तिण दिलरी लगन जाणी, वातरी धुन पिछांणी. (तिका चतरू किसियक) ॥

दोहा ॥

रात दिवस हाजर रहै, रसमैं अत रूड़ीह ॥
लखजावै दिलरी लगन, चातुर चतरूड़ीह ॥२४॥

(वात)

तो पण चतरू जुगतसूं इण कँवररी तारीफ

करी, तरै रतनां इण सांमी निजर धरी. नैं दोय झड़फ दुहांरी होठांमैंई बोलै है, ज्यूंही चतरू पण दोय झड़फांमैंहीज सारो पाछो तंत खोलै है. (तिको) ॥

दोहा ॥

मोटो भ्रम मन मांहरै, क्यूं चूको करतार ॥
फेरा झक मारत फिरै, भोगै सो भरतार ॥२५॥

(बात)

अठी कँवर पण सुखा नांवैं खवाससूं बोलियो, तद सुखै सारो भेद खोलियो. (तिको सुखो किसोक)॥

दोहा ॥

अकलां उकत उपावणो, मिल खेलण मुखियोह॥
रहै खवासीमैं रजू, सुखदायक सुखियोह ॥२६॥

(बात)

कँवर सुखानूं कही इणनैं जो दिखावै तो मनमांनियो इनांम पावै, तरै खवास निघै करनैं फेट पड़ती थी जठै लेजाय ऊभो कियो, सुरतरा झबकार।

सुं पण जाण लियो, अबै जाण अजाण होवै है, सहेल्यांसूं चाळै लागी तिरछवी निजर जोवै है, इमैं चमक चवदंत हुय लचकांणी पड़गई, जाणौ अंगमैंहीज वड़गई ॥

दोहा ॥

उभई द्रिग जुड़िया उचक, काट झीण पटकोर॥
हळवो कटक हरोलको, व्हां घूंमर पर जोर।२७।

(बात)

इतरै पवनरी फेटसूं रतनांरी साड़ीरो पल्लो पण दूर हुवो, जठै कँवररो चित घणो चकचूर हुवो, रतनां दीठो मोनैं देख तो न लिवी, यूं जाण कँवर सांमी निजर दिवी, सो चोनिजर होतांई इसो रंग वरसियो, दोनांहीरा नेत्रामैं घणो सनेह बरसियो, (तिण समैं रतनां किसियक निजर आई) ॥

दोहा ॥

पांखां वीजळ पळकती, मोत्यां चवतो मुक्ख ॥
दीवाळीवाळी दमक, दीठांइ भागै दुक्ख ॥२८॥
इण विध आभा अंगरी, झीणै पट झलकेह ॥

बीजक जाणैं बादळां, भल बीजल भळकेह।२९।
लोयण उणरा लागणां, पलकां विच पळकेह ॥
लटकणारो मोती लियां, ढीली नथ ढळकेह।३०।
सोळै किरणां सरस यों, प्रगट फव्यो विण पंक॥
सहियक सुब्रण तेलसूं, मिळियो आंण मयंक।३१।

(वात)

राम जिणारा हरषिया, आंखयांसैं आणंद बरषिया। बदन मुळकियो, अंग अंग पुळकियो। प्रसेव आयो। पूरण सुख पायो, मदन सरसियो, जिणसूं रंग ओररो ओर दरसियो, उठीनैं कँवर पण हुवो मुसताक, छकियो प्रेमरो छाक ॥

दोहा ॥

अँग अँग ऊफणियो अनँग, छैल छटा छिलियोह॥
अलबेलियो उछांछलो, भीणो रस भिळियोह ।३२।

(वात)

सनेह तो दोनांही जाणियो पण मिलणारी तिण ऊपर कँवर आ सला बिचारी, पहली को दीजे, पूठो जबाब आयां करण ज्यूं हुवै

सो कीजै ॥

दोहा ॥

अदभुत छटा अळूझियौ, खिण नह हेक खिसेह॥
मन थैं म्हारो मूसियौ, कहिदौ खून किसेह ।३३।

(वात)

ओ रुक्को लिख खवासरै हाथ दियो, खवास आघौ पहुंचांवणरो उपाय कियो। सूरजगढरी मालण फूलां, उठारा बागवान मूळानूं परणी तिणनूं फूल ले रतनां कांनी जावती दीठी, तद इण मालण सूं सैंध काढ किवी मीठी। नैंड़े जाय वात लगाय जतावतो न कियो, पण आसंतैसे रुक्को छाबड़ीमैं नाख दियो। मालण छावड़ी दे पूठी आई, तठै सुखै फिकरवांन हुय मालणनूं बतळाई। तोसूं वात करतां ओ फळ पायो, एक कामूं रुक्को थो सो घमायो। कैतो दैव फूलांमैं गिरपड़ियो होय, जिणसूं कहां छौं जायनैं छाबड़ी जोय। उठी फूलांमैं रतनांनूं रुक्को पायो। आप बांच चतरूनैं बचायो, उनमांन कियो, मुदो जाण लियो। अबै जुबाबरो रुक्को बणायो

जिणमैं दिलरो सनेह जणायो ॥

दोहा ॥

साचा पण रहियो सरस, लेखो समझलियोह ॥
आप दियो जद आपनूं, दिल म्हैं प्रथम दियोह॥३४।

(वात)

हमैं रुक्को पहुंचावणरी चित्तमैं धरी है, इतरे मालण आय रुक्को गमायांरी वात करी है। तद यां कह्यो एक रुक्को तो ओ मांनूं पायो है, ओ ले सम्हाळ लीजे, ज्यांरो हुवै ज्यानूं ठावो दीजे, मालण आय रुक्को खवासनूं दीनो, खवास आय कँवररी निजर कीनो, कँवर रुक्को बांच बांचनैं वळे बांचियो, रीझमैं अप्रमांण राचियो, (कँवर वचन) ॥

सोरठा ॥

भेकहूंत भिळियांह, पदमण नह सुख पावही ॥
मधुकराहिज मिळियांह, उसो अजब रस आवही।३५।

हमैं फेर ओ रुक्को खवासनूं दीनो, खवास चतरूसूं मिल मरजी पाय आघो कीनो। रतनां रुक्को बांच अपार खुसी आंणी, दिलरी लगन सिद्ध

हुई जाणी । हमैं जबाब घड़े है, जिणमें जड़ावही ज ड़े है ॥

दोहा ॥

तूको जोय सरोजनूं, झटक उडे पर झाड़ ॥
मधुकर मिल मुतालबी, वस कर दियो बिगाड़।३६।

कँवरवायक दोहा ॥

केतक पत्र करोतरी, धारे सिर पर धार ॥
तोही मधुकर नां तजे, गहरी धुन गुंजार ॥३७॥

रतनांवायक दोहा ॥

भँवर कहो सुखसूं भली, जुड़तां कोमळ जाय ।
कांटां विचली केतकी; दिल क्यूं आवे दाय ।३८।

कँवरवायक दोहा ॥

रिझवारीरी राहमैं, जिकां दियो पग जाय ॥
तिके न ओळो ताकसी, विध इण वात वणाय।३९।
अधर उकसतां आखरां, वचनांरा व्रवणाह ॥
प्यारी हद सुख पावसां, सुणसां जद श्रवणांह।४०।

रतनांवायक दोहा ॥

· अब मो मन वस आपरै, आवै विनां न आप ।

मिलणांरो कीधो मतो, तनरो मिटसी ताप ।४१।

कँवरवायक दोहा ॥

मिलणांरी मन मांहरै, रंच न जेज रहीज ॥
जुगत वैंत कहदो जिकुं, सारो करां सहीज ।४२।

(बात)

रतनां ओ रुको बांच चतरूसूं बोली, अठै-दिलरी सारी खोली । ओ रुक्को बांचनैं मांहरा मिलाप सनेहमैं तो भंग कीजै मती, नैं काची सलाह पण दीजै मती । इतरी अधीरप न करणी, हूं कहूं जिका हियमैं धरणी । मेळ तो विधाता मेळियो सो कुण मेटण पावै, पण उपजै जिसी तो कहणमैं आवै । अठारो मिलाप तो माफ कीजै, इणमैं हूं कहूं सो सुणलीजै । हमार जाहर हुवां ढब न आवसी, ठिकाणैं पूंतां सारो ब्यौंत वण जावसी । कँवरजी उठै चलायनैं आवै जद लगन ही पक्की जांणज्यो, मनरी मोज पण उठै ही मांणज्यो । प्रीतरी नैं नागरबेलरा पांनरी एक छटा दरसैहै, ज्युं ज्युं पाकै त्युं त्युं इधको रंग वरसै है । तद रतनां कही तैं सला तो दुर

स करी, हमैं तुंहीज कँवरजीसूं मिल करजै खरी। मर-
जी लीजै, अरजी दीजै॥

चन्द्रायणा॥

बेगो वैंत वणायक दरसण दीजियौ,
नित नित इधको नेह कँवरजी कीजियौ॥
सब गुण सुघड़ सुजाण रसिक रिझवारहो,
छकिया म्हां सिर छत्र हियारा हारहो॥
साहब थांरे संग महल रँग माणसां,
परिहां, देह सफल दिलदार जदेही जाणसां। १।

(वात)

चतरू कँवरसूं मिल अटीरी लगन पक्की जणा
ई, पीहररा मिलापरी दिलमें बोहोत अणाई। कही
आजसूं पनरा दिनां हरियाळी तीजरो हगाम है, जठै
राज जिसा रसिक रिझवारांरो काम है।

कँवरवायक दोहा॥

पूरण जदही प्रेमरस, पीस्यां हर पास्यांह।
हित बंधिया तावै हुवा, अवसर उण आस्यांह।४३।

(वात)

रतनां तो हमैं चंद्रगढरो मारग लियौ, जान पण सूरजगढनूं कूच कियौ। रंगबाग आयौ, जठै बधाईदारां इनाम पायो। सारो सहर मंडपां छायो, सांभेळारो घणो हाबीळो बणायो ॥ हमैं कँवर महलां रंगमांणै है, तीजरो नुकतो पण नजीक आवतो जाणै है। तठै कँवरनैं विचारमैं देख चित्रलेखा बोली दिलमैं हुवै सो दाखीजे, इतरो अंतर क्यूं राखीजे। तद कह्यो मांहनूं सिकाररो इसक तो चोड़े है, दूजूं तो दिल कठैई न दोड़े है। सिकाररी भाळ सुणांहां तद मनमैं घणां फूलां हां, इसा रसविलासमैं ही ओ सुख तो न भूलां हां। ओ वचन कँवररा सुण चित्रलेखा खुसी हुई उदासी न आंणी, अंगरी प्रकृती घणी लागणी जांणी। यांरी लगन लागां पछै तो न छूटसी, तिके तार बंधसी तिके कदे न तूटसी। इण भांत रात तो रंगमैं रया प्रभात हुवां दरबार कियो, सारा ही साथरो मुजरो लियो। कितरांकनूं तो तीज ऊपरै घरांनूं सीख दीवी, खासी पोसाकां अतर आसवरी निवाजसां कीवी। हमैं जांगड़ जिके मलारमैं दुहा देवै

है, रीझां मोजां लेवै है। कलावतां कवालां कनैं आपरा कियोड़ा ख्याल टिप्पा गवावै है, तान तान ऊपरै इनांम पावै है। भगतणियां तीखी तांनां ले ले रस बरसावै है, कटाच्छांमैं सारोही हावभाव दरसावै है। इण मिजलसरी तो छटा ही न्यारी, सारोही साथ मोत्यांरी माळ आफूरी क्यारी। जठै कवेसुर जिके जसरूपक पढै है जिकांमैं अनोखी अनोखी उकतां आवै है, एक एक रीझमैं सांसण पटा लाखपसाव तांई पावै है। केइक रसिक जिणांनैं नायिकाभेद जणाय दीजै है, तिणमैं सागे रसरी मूरत बणाय दीजै है। वीर रुद्र रसरा पण रूपक विसेस पढाईजै है, चोखतीख चढाईजै है। हास रस ही किणी समैं करणो पड़ै है, तिके हँसै जिके फूलसा झड़ै है। इतरै कँवर हम्मीर साथरांनूं सिकाररी सुरत दीवी, असवारी सौ।१००घोड़ासूं चंद्रगढनैं कीवी। पनौ अस्व अर वनो असवार, ओ जोड़ो विधाता आप वखाणियो पांच दस वार॥

दोहा॥

ग्रह्यां पराक्रम रूप गुण, [illegible] ॥
हद फहेत लै हालियो, रँगरासियो रिझवार ।४४।

गीतसपंखरो ॥

छिलै छाकिया छछोहा छूटा छोगाळा छबीला छैल,
आटलस छोहा जिलै जाकिया अमीर ॥
खांतीला सुवासा मढै जो सैल ढाकिया खेहा,
हुबासां अछेहां चढै हाकिया हमीर ॥१॥
प्रीत रीत पाळता विलाला साहिजादा पनां,
ओछाछळा इळा कीत ढाळता असोत ॥
आडीगारा चावचंडा भूदंडा भाळता एहा,
दूठरा डीगारा चाळा चाळता दैसोत ॥ २ ॥
जेठी जंगांजांणारा करेवा पैंडा जोम जाझै,
बेंडा रंगा माणरा भरेवा नभां बाथ ।
आछा तेज भाणरा हबोळा कीधा ऊंच अंगा,
संगा आपतणांरा सबोळा लीधां साथ ॥ ३ ॥
घटा घूंम जोयणां अमंदा वयण जोम घट्टै,
थट्टै थाट सोहणां समंदा लैण थाह ।
घनो घाडो गहांणी जळारौ ज्यूं लोयणां भीनों,

दोयणां विभाडो हलै दलारो दुवाह ॥४४॥

(बात)

ज्यांरा लटकदार लपेटा ऊपरै छोगा लटकै है, अलबेलिया आंटांमें मृगनैणियांरा चित्त अटकै है। तुररांरा तार तिकै पळकै है, पाघांरा लटपटिया पेच खँवां पर लटकै है। जिणांरी किलंग्यां लचका लेती-सी, जिके जाणैं बांसलांनूं झाला देतीसी। वंरळयांरा पळका पड़ै है, भुज ज्यांरा असमान अड़ै है। अठी रतनां जिके चन्द्रगढ आई, मनमैं तो उसंग पण चतरूनूं बताई॥

दोहा॥

मिलपण तूं आई मुदै, दिल पण रह्या न दोय॥
रखै अकेली फिर रहूं, हेली हेल न होय॥४५॥

चतरू वायक दोहा॥

मैं दीठी द्रिग मांहरा, उणरी उरड़ उसीह॥
आयो रहसी दिवस उण, खूब्यां करो खुसीह४६

(रतनांवायक दोहा)

कवल कियो जिणमें कसर, राखी रतिय न रंच।

आलीजो अळसे अजू, कै तो देव कदंच ॥४७॥

चतरू वायक दोहा ॥

नैणां हूं आई निरख, जिणरो तोसौं जीव ॥
ऊतो विजनस आवसी, प्रीतम प्यारो पीव।४८।
रती न जाणो राजवण, दिल मिळियां ते दूर ॥
रहसी डबां कपूररां, क्यूंकर नहीं कपूर ॥४९॥

रतनांवायक दोहा ॥

आवैहिज आवै अवस, परत न खोवै प्रीत ॥
ऊ जाणूं मो ज्यूं हुसी, मोय सुगुणिरो मीत।५०।

(बात)

इणभांत अठे रतनां कहै है, ज्यूं उठीनैंही मारगां वहै है। जिसो इणांरो नेह है, तिसोई उणासमैं झुक आयो मेह है। जठै बीज जिका दुसाखांरी गरज साजै है, सैदांनांरो सोर होय इणभांत घनघोर गाजै है। नदियां पूर बहै है, किराड़ां तरोवर ढहै है। पावस परताळां पड़ै है, उण बेळा औही ताता खड़ै है ॥

दोहा ॥

तिण पावस मघोरं जिण, चिंता धरतो चाव॥
बिलकुलि यों मारग वहे, प्रीतम प्रीत प्रभाव॥५१॥
रँगरातो रळियावणो, हितरस चाखणहार॥
उठ पदमण हित आवियो, रसक भँवर रिझवार।५२।

इण भांत तीजैै सैं दिन चन्द्रगढ आया, सिरदार उतर फूलवागमें गया। घोड़ा कायजै लगा या, तिको फूलबाग किसोहिक सोभै है, जिंको दी ठांई मननूं लोभै है। जिण कनैं एक चन्द्रसरोवर है, जिण सजळाईसूं इणमैं घणा गुलम तरोवर है। क्यारै क्यारै फुलवादां तिके भांतभांतरा रंगांसूं रळियावणी है,ज्यांरै इतराई फूल नैं इतरी ही कळियां है। फरस फरस केवड़ा नैं केतकीरी फरस है, ज्यांमें सोरम घणी सरस है। भँवर गुंजार सुणीजै है, आलीजा भँवरांरा सीस धुणीजै है। ठोड़ ठोड़ फुहारा नैं होद है, जठै जळचादरांरी घणी अमांमी मोज है। मोर तिके नाचै है नैं टहूकै है, जिके जाणें जसरूपकही वाचै है। सुहांरा समूह डोलै है, जिके मिनखांरी वाणी विसेस मिठास लियां बो

लै है ॥

विरछां लूंबी बेलियां, फूली फली फबेह ॥
सीतल छांह सुहावणी,दिणियर किरण दवेह ॥५३॥

(वात)

तिण चन्द्रसरोवररो नीर, निरमल इसो दरसै है, सो चांदनी रातरा हंस जिके खीरसमुद्ररै भरोसे खीरनीररा निवेड़ारै तांई चांच वार वार फरसै है । तठै कमलांरो घणो सांघणो मेळ है, जठै राजहंस कलहंसांरी केळ है । बतक सरदा घरट हंजा तिरै हैं, सारसांरा टोळा भिंगार करै है । छोटा मीन जिके एक एकरै लारै धावै है, तिणसमैं तिके नायिकावांरा कटाछांरीसी छिब दरसावै है । जठै पणहारियां नीर भरै है, तिके इसा तमासा करै है । भरिया कलसांमैं जिण समै निजर राखै है, तिणसमै मीनरो भरम जाण पांणी ढोळ ढोळ नाखै है । जिके अनुकूल निज नारीसूंई रहै छिब छाय, पण इण पणघट आयां तो ज्यांरोही पण घट जाय ॥

दोहा ॥

कंचन रूपारा कळस, निरमळ भरियो नीर ॥
पणहरणी पणहारियां, तिणहिज सरवर तीर।५४।
भरी रूप रँग रसभरी, लुळ आवै जद लैण ॥
सरवर त्यां निरखण सही, नीरज किया कै नण।५५।
सारी बातां सरसियो, उज्जल नीर अथाह ॥
केळ कळा कारज करण, वाह सरोवर वाह ।५६।

(वात)

अठै औ साहिजादा वनां आलीजा पनां बिलाला छबीला छोगाळा छैल छूटिया, ज्यांनैं देख पणहारियांरा सीळसामांन खूटिया। लाजलंगर टूटिया, बेहड़ा घणां फूटिया । कँवारियां जिके परणवारी हूंस करै है, परणी जिके उसासा भरै है । तिणसमैं रतनांरै रैवासरो मंकराणारो एक महल है, जिणमैं इणरी घणी सहल है । सो इणरी पगथळियांरा प्रतिबिंबसूं फरसतो मूंगियांरी छिब पावै है, नैं अंगरी ओपमासूं भींतां जिके सुब्रणरी निजर आवै है। हमैं पीठी सिनान सारू भूषण वसतर खोलै है, तिणसमैं नायण रंभा इणरो अंगै दे-

ख देखनैं बोलै है। जो कमलां ऊपर हीरा देखवा, तो नखां सहित यां पगांनूं ओपमा लेखवा। पुंगळ री ही पदमणयां गरब छांडै है, अै पग दीठां कुण पग मांडै है। कहै ज्यांसूं कुण विवाद करै है, पण एडियांनूं कांई जांण सुपारीरी ओपमा धरै है। गुलाबरा झवांसू पग झवावै है, तो पण धड़धड़ी खावै है। जिके केळरा खंभ ठंडो पाळो, जिणरी ओपमा यां पीडियांसूं तो टाळो। जद केळरा खंभामैं केळ बिलास निजर आवै, तद यां जांघांरी ओपमा पावै तो पावैं। यां जाघांमैं आ रेखा इसी, इणनूं ओपमा ही लागै किसी। जो कहां हिरणारी खुरी, तो दीठांई किणनूं सुहावै सुणतांही लागै बुरी। नैं कदेक कहां स मंदरी सीप, तो तिका पण न फबै इणरै समीप। फेर जो मींढां छोटी मीन, तिका तो लाजां मरती हुई जलमैं लीन। पळै पीपलरो पण दळ, इणाहीज कारण रहै चळ, विचळ ओतो तिलांतनकरो इसो सोभारो सदन है, अरघियो कनकरो इणनूं अरघियो मदन है। अै नितंब जिके सदीठ चक्र रूप है,

दिन दिन सोभै घणां अनूप है। आ मूठी जितरी क कमर इणहीज तरै खीण खीण होती जावसी। तो दिन दोयकमैं दीसण ही न पावसी। जिण भांत पड़वारा चंदरो नैं मध्यसरस्वतीरो रूप, दीसै नहीं पण है तो अनूप। दीठो घणोही पीपळरो पान, तिको कठै इण उदररै समान। जिको कोई भोळै भूल इण पेटरो वरसण करसी, तिको पेटही खाय मरसी जिसड़ी ही रसकूपिका तिसड़ी ही नाभ, आ ओपमा सरीसी इणमें टोटो न लाभ। फेर गुलाबरो पिण खुलतो सो फूल, हुवै तो हुवै इणरै समतूल। कवीश्वर कहै तिका सुण वैणी, कठै त्रिवली नैं कठै त्रिवेणी। आ रोमराजी जोईजै है, रोम रोम राजी होईजै है। कांई पीली नैं कांई राती, यां छातियांनूं ओपमा दै इसी किसरी छाती। कामलता फळी, किनां कनक कमलांरी कळी। जद यानैं कोई प्यारो प्रीतम परसैला, तद हमारसूंही सो गुणो रूप दरसैला। दीठो जोईजै देस काल, भला यां हांथांनैं कद पूगै कमल सनाल। कोई मनमैं जाणै, कोई कहै, पण

औ हाथ दीठां किणरो मन हाथ रहै । आतो हरको ई जाणैं है, कांई जाण इसा सुंदर कंठनूं संखरी ओपमा आणैं है। आ चिबुक ठोडी किसी, सागे बिलाय ती सेंव हुवै जिसी । इण चिबुक ठोडीमें बडो एक चोज है, तिलरै मिस ओ तो सागै मनोज है । यां अधरांरा मिठासरी तो तारीफ ही न कीजै है, मूंगियांरी लालीतो यांरी दलालीमैं दीजै है । आ छोटी मूंफाड़ इसी सोहै है, ओ मंदहास किणनूं न मोहै है । इण बतीसीरो इसो वाणक है, इण आगै कांई मोती माणक है । हसतां फूल झड़ै है, चौकारी चकाचूंधमैं मुख नीठ निजर पड़ै है । इण मुखरी सहजमैं सुवास है, जिणसूं भँवर आसपास है । यां कपोलांरी सफाई अजब निजर आवै है, जिका इणां ऊपर ओपमां ल्यावां सूं तिसळ तिसळ जावै है, पींजरा सांमो हाथ कर वोली कोई कीररी ओपमा द्यो सो ओर नासकानूं दीज्यो, इणनैं तो अनुपमही जाणलीज्यो । दीठी रूपाळी मैंही घणियां, पण इसी यांहीज लोयणांरी अणियां । जिणभांत खतंगरा

बाण, लागां थकां हरैहीज प्राण । श्रीसदनराहीज साहिब, मदन महीपतराहीज मुसाहिब । आ भुँहांरां री बांक, तिका जांणैं तीनरोहीज आंक । मन बचन नैं काय, प्रीतम वस करणरोहीज उपाय । आ ओप मा देवै है साराही कविलोकांरो कटक, पिण इण मुखरी कठै चद्रमामैं चटक । जिण दीठां पछै अंतर न भावै एक खिणारो, इण मूंढारी होड करै मूंडो किणरो । ओ तो एक मिलै लेखो, लिलाड़ देखो भावै अरधचंद्र देखो । इसी ओपमा तो सुणतांई आवै रीस, कठै नारेल नैं कठै सीस । एक ओपमा वळे वेस, केसां जोड़ै मखतुल नैं मखतुलां जोड़ै केस । लांकीलो चूड़ो पण घणो रूड़ो चमकै है, देही तिका जांणैं दामणीहीदमकै है । जिण अंग जावक सुधारोहीज भार है, इण नाजकतारो किसो पार है । हमैं सिनांन कर सुपेद दुपटो ओढियो, कचमैड़ीमैं जांणारो विचार कियो । जिका कचमैड़ी विसेष जोखरी, जिणमैं एक बात घणीज नोखरी । रतनां जिकी रतनांनूं ही जाणी ही, बीजी इसी कांई न बखाणी ही । सो अबै अ-

ठै अचंभो आवै है, अठै आयां तो निरीही रतनां देखीजावै है। हमैं नायण मगरै अळतो देवै है, एक पगरै दियो नैं दूजो पम हाथमैं लेवै है। इतरै चतरू आयनैं रतनांनूं खुसीरी निजर दिवी, तद रतनां दौड़ चतरूसूं वात किवी। चतरू कह्यो बधाई दीजै, मनचिंतिया मनोरथ सिद्ध कीजै। सो औ आखर सुण नैं मनही मनमैं अपार हरष कियो, जाणौं कोई इम्रत हीज पियो। भळै छटा इण भांत दरसी, इणारा श्रवणां रूपी सीपांमैं जाणौं स्वातकी बूंद बरसी। हमैं सुख सौं तो पमावै नहीं, पण हरष अंगमैं समावै नहीं।-जिण भांत दीपककी लोय, सनेह सींचियां वळै घणी प्रकासमान होय। इण भांत आणंदमैं इतरी अळूझी, सो विसेस बिगत पण न बूझी। हमैं चतरू नैं तो कँवररै समाधान सारू सरबरामैं राखी, इण वातरी घणी भोळावण दाखी। नैं रतनां पूठी नायण कनैं हीज आई, नायण पण सुघड़ सो वात जाणपाई। कही कपूरनैं घणोही छिपावै, तो पण सुगंध आवैही आवै। दीपक कदे भोडळमैं दुरिया रहै, थे मु-

खसूं मत कहो आपही अहनाण कहै । तद रतनां कही तूं जाणै जिण कहबतमैं हूं कदे न रहसूं, न होसी जिको थनैं किसी न कहसूं । ओ तो म्हारा मनरी सोखरो सीसफूल चतरू हँसते छानैं ही लियो थो, पछै इणाही गमाय दियो थो। सो हमैं पूठो पायो है, तिणसूं इतरो हरष आयो है ॥

दोहा ॥

नायण जिणमैं गुण नहीं, लोक कुटुम्ब लड़ेह ॥
पंथ वुहां इण प्रेमरे, परवस प्राण पड़ेह ॥ १ ॥

नायण वायक दोहा

वालो सारांही विचै, नेह पंथ न्यारोह ॥
भँवर किसे गुण कहि भलां,पदमणानूं प्यारोह५७

(बात)

रतनां हस बोली हमै दूसरा पगरै अळतो दीजै, घणी सतावी कीजै । तद नायण देखै तो दोन्यूं पग सरीसा निजर आवै है, क्यूंही भेद न जणावै है । तद रतनां कही मोनूं इतरी तो खबर है, जीवणां पगसूं डावो पगतो जबर है । तद नायण दू

जा पगरै अळतो भरै है, इसो हांसो करै है । अरे अलता तैं भेद न दियो, सो भलो काम कियो । हमैं हूं कहूं जिका सुणजै, प्रीतमरै लिलाड़ थारो रंग दीजै । सुणज्यो बिछिया थे पण सुण लीज्यो, प्रीतमरै कांनां लागणारो उपाय बेगो कीज्यो । फेर नायण हसी थारा अखियाळा लोयणांमैं काजळ तो करूंहूं, पण आंगळी काटणसूं डरूंहूं । इमैं नायण केसपास सळूजावै है, आपरा मननूं अळूजावै है । अगर खेवै है, सुगंध देवै है । सूंधा सूधीजै है, सीसियांरी सीसियां उंधीजै है : चोटी करै है, तिण आगै नागणही लोटी भरै है । गुंथणीमैं पड़ै है लहर, तठै कहो कुण सकैहै ठहर । यां दोय पाटियां बिचै मांगरी अनोखी गत, इणमैं किणिहीरो मन फसो मत। इणमैं गयोड़ो मन लाभै कठी, आधी रात अठी और आधी रात अठी । अलकां छूटतां मुख इसो सोभा पाई, दाम ऊपर जाणैं सित्यावळी आई । आपरो तन मन वारै है, अलकां सँवारै है । कंचुकी कसै है, मनमैं हसै है । हथांरी मँहधी धोवै है, रंग आयो जोवै है । अधरां

रंग दीजै है , तिलक तिके कीजै है । घुमाळो गाघरो पहरीजै है, लहरियो ओढियो जिणमैं तन मन लहरीजै है । लंक जिका लचै है, तिणसूं कटिमेखला रचै है । अंग अंगमैं छिबरी लपटां अछेह उपड़े है, पातळी निराट है पण भरिये डील जांणीपड़ै है । इण अंगमैं सोनो तो दीसणही न पावै है, स्पर्श कियां भेद जणावै है । सोनारो तो कठोर धरम है, अंग जिके घणो कोमळ नरम है । तिणनूं इण भांत ओपमां ठहरै है, मोत्यांरा गहणां पहरै है । गुदीमैं मोत्यांरो गुच्छो देवै है, सु एडियांरी झांईसूं चिरमियांरी छिब लेवै है । तिण लटकणारा मोतीनूं झोका दीजै है, अधरांरी झांईसूं मूंगियांरो रंग लीजै है । जो कदंच मोतीरी झांई अधंर धरै है, तो बीड़ारो चूनो लागो जांण पूंछणारी करै है । ओरही मोती जठै अंगरी झांई फरसै है, तठै कपूररा सामिणिया दरसै है । जिका सखियां हाथांसूं मोत्यांरा हार पहराया है, तिकाई भूल भूल कपूररा ठहराया है । वार वार तिणा छुवावै है, तोपण भूल भूल जा

वें है । अै बिचारा भँवरा भेद कहै है, बीज्यूं सो नजुही तो अंगमेंहीज मिल रहै है । इतरै एक चोसर किणही इशारा हाथमें दियौ, सो हथेळीमें धरतांई गुलाबरै रंग कियौ । पछै गळै परसियो, तिण वेळा चंपो दरसियो । यूं करतां चोसर ऊपर निजर दिवी, तठै गुलकोयलीरीसी छिब दिवी । इसी चीज ऊपर हांसो इणांनूं आयो, तठै चमेली पूठो आपरो सागे रंग पायो । अंग अंगमैं दरपणरी सी दमक, जिण सूं गहणांरी दोलड़ी तेलड़ी चोलड़ी चमक । जिणरै पानरो पीक गळै उतरतो वारै झलकै है, सो गोरा गालां ऊपर जाणैं तिमरणयारो माणक हीज पळकै है । दीठ न लागण सारू दिठांणो दियो, किनां दीठ लागणरो हीज उपाव कियो । माळ माळ मोती सारिया, भांत भांतरा भूषण धारिया । वार वार बीड़ा चावै है, तिको पिण मिजाजरै तावै है । हमैं सहेल्यांरा झूलरामैं मुळकती मंद, किरत्यांरा झूमकामैं ज्यूं पूनमरो चंद । इसी आ टोळी सहेल्यां सारी, इणभांत तीज रमणनूं नीसरी ॥

(चन्द्रायणा)

चोटीवाळी चटक लोयणां लागणी,
फणधर जिसड़े फैल नहीं कोई नागणी ॥
अलकावल अदभूत छुवंती छत्तियां,
उभ्भकंती अंग अंग क ताजण तत्तियां ॥
छछवी छैलण छूट छकी छिब छोळमैं,
परिहां, इणविध ऊभी आय पटा भ्भर पोळमैं ॥५८॥

(छप्पय।)

घणै घेर गाघरो गरक फिरवाजी गोटा,
लपेदार लहरियो अधखुल्या खुल्या अकोटा॥
सीसफूल सोभिया कियो टीको केसररो,
दसन जोत दमकती वळै पळको बेसररो ॥
ठमकती पाय गूघरू ठणण, भणण संग करता भमर ॥
चमकती बीज आवै चली, समर हूँत करवा समर।५९।

(चन्द्रायणां)

आभा भ्भलपट अंग क चंदे चीरियां,
दरियाई धुज्ज देह धरै डग धीरियां ॥
लटकण भ्भोला लेह क वेसर वंकियां,

भरियां भूषण भार लचकती लंकियां ॥
गावे अनवा गीत वणी पिकवेणियां,
परिहां, एक एक थी अवल नवल मृगनैणियां॥६०॥

(दोहा)

सारी हेक सरीखियां, तोली हेक तुलेह ॥
पात लजाळूरी परै, लागां हाथ लुळेह ॥६१॥

(वात)

श्रौरही झूलराराझूलरा रमझम करता फूलबागनुं आवै है, लहरिया गावै है। गहरो गहके है, डेडरा डहके है। मोरांरो सोर, झिल्लीरो झिंगोर। वळै बोलै चातक, विरहीजनांरा घातक। इतरै कांठळ उठी एकण पाखती, बुगलां सहित अर कागलियां नाखती। दीठां जोईजै घटारो वणाव, इसोही तिणसमैं इंद्रधनुषरो तणाव। तीज गळै है, विरहीजनांरी छाती जळै है। तीजणयां हींड मचावै है, लंक लचावै है। वीजरो सिलाव, मेहरो मिलाव। महीं फुहारा वरसै है, तठै तीजणयां हींडती थकी इणभांत दरसै है।

(दोहा)

वणी घटा घणी विचै, पावसनूं परसेह ।
कुण कोइ कामणियां कहै, दामणियां दरसेह॥६२॥
झमकंती तनरी झलक, भूषण छिब भरियांह ॥
कुण कोइ कामणियां कहै, परतखही परियांह ॥६३॥
हींडण मिस रत रीत हद, पास मनोज पढंत ॥
चोटी उचटण मिस चलै, चाबक चूक चढंत ॥६४॥
मचकै हींड मचोळतां, लचकै झीणो लंक ।
तन दमकै दामण तिहीं, मुखड़ो जाण मयंक ।६५।

(चतरू वायक दोहा)

जद थांनूं इम जोवसां, भँजसी तद मन भूख ॥
मचकंतां हींडो मिलै, पीस्यो अधर पियूख ।६६।

(वात)

इणतरै रतनां वागरै नेड़ी आई, जठै कंवर हमीर पण देखतांई जाण पाई । जिको हमीर वरसतो नूर, दरसतो सूर । तिणनूं रतनां देख आंख्यां मैंही लटको कियो, उठी कंवर पिण इसारामैंही आदर दियो । हमैं कंवर रतनांनूं दिखायनैं हाथसूं हियो चां

पियो, अठी इण आपरो जड़ाऊ सीसफूल ढांकियो। हमें जिणभांत लागै दीठ, इण भांत इणतो पेट सो दुखाय फेरी पीठ। सखियांसूं आगै वधवधनैं सांमी होवै, इतरै मिसकर कंवर हमीरनूं जोवै। रुख वाँ सांनूं अर वहै आगै, अठै ओपमां निसांणरी लागै! कंवर पिण सुखियांनूं रतनां रै पूठै कियो, नैं रतनां पिण चतरूनूं इसारो दियो। सु इण वैंतसूं वात की वी, सुखियानूं गोसारी खिड़की दिखाय दिवी। हमैं कंवर मदनरै जोरै, सुगंधरै घोरै। जोबन मद चुवंतो, प्रेमातुर मदनातुर हुवंतो। सुखानूं साथे ले चवड़ारो मारग टाळियां, हालियो छोगा राळियां। हमैं रतनां सांमी आय लटकै लुळी, अठै पूरण प्रेमरी गांठ पक्की घुळी। कंवर छातीसूं भीड़ मिळियो, सनेहरो समंद पाजां छिळियो। सनेहरा दोनां हीनूं चढिया चावळ, रतनां किवी निजर कंवर किवी निछरावळ। वळै तनजेब मंगाय कंवररी निजर किवी, कँवर पण लपेटामैं पाटलछी थी सु रतनांनूं इनायत किवी। दोनांरो जिसो जहूर, तिसीही

सहूर । परसपर सारीसी ही सोभ, नै सारीसो ही देखणारो लागो लोभ । रूप सुधारी अदभुत विरखा, ज्यौं ज्यौं पीवै त्यौं त्यौं इधकी तिरखा ।

(दोहा)

दरसत दोउवां रै द्रिगां, प्रगटी प्रेम पुरीह ॥
दरसण बाधा दियणनूं, विच क्यूं पलक बुरीह॥६७॥
वायस द्रिग दोउवां विचै, हिळ मिळ गोलक हेक॥
त्यौंही यां दोउवां तनां, वणियो जीव विमेक ॥६८॥

(वात)

हमैं चोपड़ खेलै है, प्रेम मगन हुवा कठीरी कठी सार मेलै है । बाजी बुलावै है, सनस खुलावै है। प्यारीरी लालड़ी प्रीतमरो हीरो, प्यारीरी चूंदड़ी प्रीतमरो चीरो । रात्यौं चौपड़ रमणो भेळो, प्यारीरै आमकैरी प्रीतमरो केळो। पासो जीतै नैं पासो हारै, सारी वातां मुतलब सारै । सात हेटलो पड़ियो पासो, कंवर हमीर कीनो है हांसो । वळै हसियो पासो चलांवांहां, सु थांरीं लाल गोटी मार बाजी बेगी फवांहां ॥

चौपई॥

प्रीतम पासो दुरस न भाखै, दांवपड़्यांरी खबर न राखै॥
प्यारी कहै चुकां नहिं सरै, प्रीतम अरथ अचूको करै६९

(कंवर वायक दोहा)

चुप रहि तज कूड़ो चलण, दाव पड़ै ज्यूं देह ॥
इती मांन बिनती इसो, लेह बडो जस लेह।७०।

(रतनां वायक सोरठा)

दीनां साचो दाव, परत नहीं कूड़ो पड़ै ॥
कैणो किसूं कहाव, है रस अठै न राड़ है ॥७१॥

(वात)

पासो ढुळै है, हाथ लुळै है। ढीली नथ ढळकै है, प्रेमरी झांई जाहर झळकै है। इतरै अंतरंग सखी उमां झुमां सरूपी आई, अंतर आकूती गुळकंद लाई। सुखाकनैं पण आसौ, पावै जिणांनूं घणो खासौ॥ सो चतरू हाथ दीनौ, चतरू आप निजर कीनौ ॥ (कंवरनैं चित्तमैं चकित देख चतरू बोली) ॥

(दोहा)

केळ चतुर लख कँवरजी, भूलो मत भ्रमभाव ॥
चेट लहीं गज सिर चढै, सिंहां जात सुभाव॥७२॥

तज छासट तेतीसनूं; रुख तेसठ रहिज्यो ॥
चतरू तिय पियसौं चवै, वायक इण वहिज्यो ॥७३॥

(बात)

परस्पर मनुहारां हुवै है, हाथसूं हाथ छुवै है। सोगनां दवै है, नसो लेवै है। रूप सुधारा आसुवांमैं छकै है, प्याला सा नेत्रांसूं परस्पर तकै है। अंतर लगावै है, मदन जगावै है। मजाकां करै है, तन मन हरै है। तठै कटाच्छ जिके तो कटारयांरी चोट, पलकां तिके ढालांरी ओट। नेह जठै वणियो नायक, नै ण जाणै भिड़िया पायक। कवित्त दुहा पढै है, उमंगा चढै है ॥

(कंवर वायक सोरठा)

तकिया तो इण तंत, चूकै उर अवर न चढै ॥
बांध लियो बुधवंत, चुंपांळी मो मन चपळ ॥७४॥

[रतनां वायक दोहा]

वरषा रितु दीठां वणै, संक तजै कर सोर ॥
तरूवर फळै वसंत तो, मैंमत हुवै न मोर ॥७५॥

[कंवर वायक दोहा]

गत कांकर सांकर गही, किंसमिस सकुच कुड़ैह ॥
प्यारी मुखमीठा पणै, जोड़ै क्यों न जुड़ैह ॥७६॥
मदछक वय छक रूपछक, प्रबल प्रेम छक पाक ॥
कुळ छक गुण छक मदन छक, छकी अनेकां छाक ७७
उर ज्यौं अंचळ ऊससै, रँगदै होठ रदन्न ॥
औ मिल ऊभळिया उभै, मद अर वळै मदन्न॥७८॥

(वात)

गलबांही दीजै है, पूरण नेह रस लीजै है । कंवर उभटनैं रतनांरी अंगीरी कस खोलै है, जठै चतरू घोलै है ।

(दोहा)

धीजावण विध चित धरो, हळबळ मत होवोह ॥
रगदण ज्यौं नहि राजवण, जीवित तो जोवोह।७९।

(कंवर वायक दोहा।)

चतरू तो जिसड़ी चतुर, समभ न लीनो सार ॥
लचै न डाळी लहलही, भमरावाळे भार ॥ ८० ॥

(बात)

चतरू हस मुळक दियो, हाथ जोड़नैं लटको कियो ॥

(दोहा)

सरद्दग घ्रत जुत जतन सद, हतक वैद निज हत्थ॥
उरज उवर भुज रस अधर, पिंड सेक पट पत्थ८१
झुकझुक रँगरसरी झड़ी, बादळ ज्यूं बूठेह ॥
मन दोउवां रे मदनरी, उदमादां ऊठेह ॥ ८२ ॥
झुक झूमत झूमत झुकत, उझकत बकत अपार ॥
हस रींझत रींझत हसत, निरखत नवली नार।८३।
कँवर कुतूहळकेळमैं, चढत चोगुणौ चाव ॥
रतन कपोलां ऊपरै, जड़ियौ रतन जड़ाव । ८४ ।
वांसै हुय मेळै वदन, तिय पिय इक ताछांह ॥
पियै चिहूं सम परसपर, अधरां रस आछांह ॥८५॥
मिळिया राखै राग मझ, तसकण दियै न तार ॥
रतनां इक चाबक रुड़ो, असं दुहुवां असवार॥८६॥

(बात)

अबै मदन रस लूटिया, छछोवा छूटिया । गुलाबकळी विगसी, भँवर गुंजार निकसी ॥

सोरठा ॥

पिय कट परसंताह, कामणारा जुग पद किनां ॥
दुतरफ दरसंताह, तरगस दोय दस तीररा॥८७॥

(दोहा)

वीभाळिया नैंणां वणी, वंक पटां वनड़ीह ॥
वालमरा श्रवणां वंजी, पायलरी पनड़ीह॥८८॥
ऊवा नह आदर अठै, सुण लीजो सखियाह ॥
कांनां लागा कँवररै, वण नायक बिछियाह॥८९॥
कुच जंघा धर द्रग करां, भूषण वसतर भोग ॥
रतरणमैं पाछै रहै, जे कुच बधिया जोग॥९०॥

(वात)

इणभांत कँवररो हिळियो अंग, रुचसौं घोटियो जांणै कुकुमरो रंग। रतनांरा मुखरी मोड़, भुहारांरी मरोड़। नाकरी चढण, नांहीरी पढण। नाचतीं दीठ, वळपड़ती पीठ। हाथांरी झुभक, अंगांरी उभक। तिण समैरो सीकरण कैहो, मंत्र वसीकरण जैहो।

(रतनां वायक दोहा)

जी थाकांसूं जाणदो, क्यूं बदनाम करोह ॥

वैरी बिछिया बाजसी, धीरज नेक धरोह ॥९१॥
जी म्हांरी लज जावसी, पायल ठणक्यां पाय ॥
कांइ हठ लागा कँवरजी, हाय न मांनो हाय९२
जी म्हांरो जिव जायहै, किरपा नैंक करोह ॥
कांइ हो काढो काळजो, कांइ हो प्राण हरोह॥९३॥

(कंवर वायक चन्द्रायणा)

मनभावै उदमाद मुखां धुन माफरी ॥
विरछ विलूंबी बेल क जुगत जुराफरी ॥
कै कोइ लाल कबाण क करण कंवादमैं,
कर लुळता कमणैत क सरस सवादमैं ॥
उघड़ी छिब अदभूत लुँटी छिब लाजरी,
गरिहां, नोबत घुरी निसंक मदन महाराजरी॥९४॥

(वात)

जिण समैरा रसरो किसो छेह, जठै घणा जिका धरती मधवो जिको सांवणारो सेह। इण भांत सुर त जंगजूटा, घायल हुय छूटा ॥

(चतरू वायक दोहा)

पेखो पड़ी पिलंग पर, कुरभ्कण कुरळातीह ॥

किियो गज़ब कांइ कँवरजी, मूछां मुरळातीह ॥९५॥
अधरां तलपां उघड़िया, सळ पड़िया साड़ीह॥
पलकां पीक पळेटिया, चख करसी चाड़ीह॥९६॥

(रतनां वायक दोहा)

लागी रहती लोयणां, करता काज अकाज ॥
सरकी समर समाजमैं, लाज न राखी लाज॥९७॥

(वात)

बैसर वळ खायौ, जिणमैं वळै जुलफरो आंटो आयो। पळकां पीक पड़िया, अलकां मोती अड़िया। गालां चकारा इण भांत घिरिया, जाणैं मदनरा घोड़ा कूंडिये फिरिया। आंगी दड़की, कर चूड़ी कड़की। चख राता चोळ, काजळ छुया कपोळ। छतियां ऊपर नखांरा डंक, किनां हिये उघड़िया भालारा अंक। वळै वणियो इसो वाणक, कनकरा कुंभां जाणैं जड़िया माणक। आळस मुड़िया, हाथ बेहूं ऊचानूं जुड़िया। बीच ज्यांरै वणियो वदन, परवेष बींटिया ज्यौं सुधारो सदन। कान खुजाळतां ती वांरो भणणाट, किनां वदन कमल कनैं पीळा भँवर

रांरो भणणाट ॥

(दोहा)

अध विकस्या नैणां अधर, अध निकस्या अखरांह॥
आछी घेरी आळकस, सायधणनूं सखरांह॥९८॥

(वात)

कँवररै पिण पळकां पीक, अधरां काजळरी लीक। आळस अंग, भाल अळतारो रंग। लाल नैंण, चल विचळ वैंण। हिय गाडियो हार, तुररांरा तूटा तार। नखांरी रेख, दूज चन्दरै वेख। पेच लळकिया, सिरपेच ढळकिया। कँवर ज्यौं ज्यौं रसरी वात जंपै, रतनांरो अंग त्यौं त्यौं कंपै॥

चौपई॥

कँवर कही विध वसरी वात,
वडी करी नह रसरी रात॥
प्यारी हार ठरयो अब नवसर,
आवां अवस कहो जिण अवसर॥९९॥

(वात)

इणतरै कँवर देस जाणरी मरजी लिखी, तद र-

तनां इसी अरज किवी ॥

(दोहा)

भामण कामण भाखजै, जो विछड़णारी जीव ॥
आप नहीं हिय ओलजै, प्यारी कहतां पीव॥१००॥

(कंवर वायक दोहा)

समाधानरी तिण समैं, जिय सह सक्यौ न जेज ॥
प्यारी नह जावां परत, मत कर मांन मजेज १०१

(चतरू रतनांनूं कंवरत वचनांरी जुगत कहै है दोहा)

जावां नांहिं इण जावनूं, कहतां उर कंप्योह ॥
तद नांहिं जावां इणतरै, जीहां पिव जंप्योह॥१०२॥

(वात)

यूं कहतां इतरामैं तो हुई फजर, कूकड़ा बोलिया बाजी गजर । तद कँवर वागनूं सीख करी, तोपिण रतनां आंखियां भरी । चाळां लूंबी, गळे विलूंबी । बोलणी न आयौ, गळो गहरायौ । हमैं कँवर उण हीज माग, पुहुँतो वाग । तरै देख हसियौ सारो साथ, आपसमैं देदे ताळी हाथ । आछा वणिया हो रंगमैं रळिया, हदानहद कांई झड़प खेलिया । भली

साभी सिकार सद, हदफरी चोट उतारी हद।
अठै रतनां छिपावरै आंटै, ओर दुपटो ओढियो अर आंखियां छांटै। इतरै बाभीनूं आवती देख बोली, आवो बाभी आघा आवो, अठै कमतर हुवो चावो ॥

(बाभी वायक दोहा)

जद मैं नणदल जाणियो, विगड़णरी वातांह ॥
अधरां चसको ऊठियो, बाभी बतलातांह ॥१०३॥
ओर दुपट्टो ओढियो, पलकां धोया पीक ॥
छिप्यो न रहसी खून छल, ठांभ खड़ा तो ठीक१०४

(ओर बोह रंग सखियां वायक दोहा)

उभै कपोलां ऊघड़ै, छांनैं नह छिपियोह ॥
निज आसकरा नेहरो, चसमो हद चिपियोह १०५
रमियो कोइक रातरा, दिलरो इक दाईह ॥
आ उणरा अनुरागरी, झलकै चख झांईह॥१०६॥

(वात)

इणतरै इणरी तरै देखनैं आपसमैं हसी, जठै रतन्नांरा नेत्रांमैं घणी लाज बसी ॥

[रतनां वायक दोहा]

दाड़मरा कुळिया दसन, सांप्रत जांण सुवेह ॥
अधरां डंक उपाड़िया, हांसो ग्रथा हुवैह॥१०७॥
सुवे सको करसी सदै, पण म्हैं तो पाळांह ॥
तीवांरा गडिया तिके, गुघरिया गाळांह॥१०८॥
कोई मत जाणो कदे, खोटी मत खिसतीह ॥
अँग अँग सारा ऊपड्या, परगटतां पिसतीह॥१०९॥
वात न मानणनूं बणी, आ इक सरखी ओळ ॥
पिसती कर जक नह पड़ै, चख तिण कारण चोळ११०

(वात)

इतरामैं सुवै रातरी वात पढणी सरू किवी, तद पहली चतरू दौड़नैं दुगदुगीरी मिण चूँचमैं दिवी ॥

(वाहली चन्द्रावती वायक दोहा)

मन दृढ जाणौं मांहरो, आवै जो इतवार ॥
प्राणपियारा पीवरो, आलि कहै उणिहार ॥१११॥

[रतनां वायक दोहा]

रुक जिण जिण छिबमैं रहूं, पाऊं तठै न पार ॥
सिख नख सूधो हे सखी, न सकूं पीव निहार११२

(वात)

हमैं उत्तर पड़उत्तर करतां नीठ गेल छूटी, एकंत हुवा चतरूनैं कही चवातौ फूटी। हमैं तूंही बोल, कियो जोइजै कांई तोल। चतरू कह्यो पड़णदो रात, कँवरजीसूं मिळियां कीजै बात। हमैं रतनारा तनमैं इतरौ ही विरह लखायौ सरस, दिन वीतै किनां वीतै बरस॥

(रतनां वायक चौपाई)

अब हूसी कद सूरज अस्त,
मिळ पिवसूं होसूं कद मस्त॥
म्हैंनत मोटी टोटी टार,
पगां पांगळो हाकणहार॥११३॥
राह चलंतां अपड़ै राह,
दरसै इण उर आहिज दाह॥
आखत वचन आखतां एम,
प्यारी पिव मिलवारै प्रेम॥११४॥

(वात)

खिण खिणमैं घणी आतुर हांवै है, वार वार आं

सुवां भानां वसतर निचोवै है । वळै खिण खिणमैं दरपण हेरै है, कपोलांरा चंकारां हाथ फेरै है । अधर खरूंट परसै है, दिलरो मोह चौड़ै दरसै है ॥ पीतमरा लपेटारी पाटलडी वार वार माथै धरै है, चुंबन करै है । छातीसूं चिपावै है, खिण खिणमैं देखै है नैं खिण खिणमैं छिपावै है । रंगरी रैण, जिके जिके प्रीतमरा वैंण । हदसूं जाद, सारा इणनूं निरंतर याद । वळै चतरूसूं वात किवी, यूं करतां नीठ सांझ लिवी । हमैं बारै आभूषण सोळै सिणगार सझियां हामकाम लोचनी हुई ऊभी वाट जोवै है, प्रेमातुर मदनातुर होवै है ॥

(सोरठा)

छिब इण द्रिग छायाह, इकटक पिव मग आगमच॥
भामण मन भायाह, वारज जाण विछाविया॥११५॥

(वात)

जिणसम गहरो मुधरो गाजै है, पवन सीतल मंद सुगंध वाजै है । नौघण मेहरी सघण छोळां परताळां पड़ती जिकै जमी नींठ खमै है, बीज आभै

न मावै है सो जांणै लुकमीचणी रामत रमै है। चातक मोरांरो सोर तन मन हरै है, जिके जांणै ने हरा नकीब इतमांमहीज करै है ॥

(दोहा)

आज उमंग्या च्यार औ, सुण जलधररो सोर ॥
पिक तरवर सुख सेझ पिय, मींडक सर गिर मोर११६
घूंबी ग्रिह लूंबी घटा, घटा करै घन घोर ॥
पीव पधारै पिलँग पर, मंगल गावै मोर ॥ ११७ ॥

(वात)

तठै कंवर आळस मोड़ निंदाळू नाहर ज्यूं ऊठ सुखानूं साथ ले खिड़की आयो, आगै घणो जाबतो पायो। जठै वीजरै झबकै चतरू ऊंची ऊभी हाथरो झालो दियो, तदि यां पाखतीरा झरोखारो मारग लियो। हमैं सुखै सिलाम कर कँवररो दुपटो माथे मेलियो, माथारो पागोटो ऊंचेनूं चलायो सु झरोखै ऊभी चतरू झेलियो। च्यार लड़ सारीसी टिराय कँवरनूं ऊचो लियो, जिण तिण भांत आपरो काम सही कियो। रतनां लगथगती लाजती थकी

लटको कियो, कँवर पण तरैहसूं ताजीम दियो । रतनां मदरै वस निसंक हुई थी तिणरा संकोचसूं रुकण लागी, लाजरै भार आंखियां झुकण लागी ॥

(चतरू वायक दोहा)

भिड़िया रत रण कुच भड़ां, दुस्सहि रीझ दियेह ॥
लपक लुकी तिण लाजनूं, हिव फिर धरत हियेह ११८

(वात)

अठै रतनां मोदमैं भीनी, कँवर उठाय गोदमैं लीनी । जठै चतरू सिरावणीरी अरज करी, मूंढा आगै तासळी धरी । हमैं कवररी मनवार हुईजै है, हाथसूं परसपर अधर छुईजे है । रतनां कहै हठ नह कीजै, पहलां कवो आप लीजै । कँवर कहै मुखड़ो मांडीजै, अड़बीलीजी अड़बी छांडीजै । इण भांत सोगनां दिरावै है, आप आपरी टेक निभावै है । चतरू दोनांईरा सोगन्न सांचा कराया, एके साथे कवा लिराया । हमैं कुरला किया, पानांरा बीड़ा लिया । जठै कँवररो दिल खिलबतमैं जाणियो, तद चतरू जाय जोजदांन आणियो । जिणमैं आसणां

री सिखियां आवण लागी, तठै रतनां निजर दुरावण लागी। जठै कँवर विपरीत रतरी सिबी हाथमैं ले रतनांनूं दरसावरा लागो, खिलवतरो घणो रस वरसावरा लागो। इराभांत रंग वणरह्यो है, जिणमें सिरागार रसरोहीज तंत छरा रह्यो है। वळै कँवर कैतूलरै छापै, रतनांरो पुणचो पकड़ कळाईसूं मापै। अलकां सँवारै कंचुकी कसै है, दर्पण दिखावै हसावै हसै है। प्यारी देखां थांरै कपोलांरो तिल, चकारांमैं किसोयक रह्यो है मिल। जिको कनकरै आंगरा जड़ाऊ थांणो, जिणमें सिरागार रसरोहीज चटो लागो जांणो। सोनारो रंग तो कपोलांरा रंगसूं उरै है, पण चकारारा चहनही करणफूलरी चूनियांमैं दुरै है। वळै तमासा करै इरातरै, देखां म्हांरी अंगूठी थांरै अंगूठै पहरावो किणतरै॥

(दोहा)

आद रास उणिहार थी, अंत रास उणिहार॥
समर करै तो सुंदरी, उपजै हरख अपार॥ ११९॥

(वात)

रतनां हस मुळक दियो सांमो दीठो, विनां बोल्यांही कियो जाब मीठो। दिवो मिटियो पण रतनां रै चहुँ पास, कुण कहै अंधारो पूनमरोहीज प्रकास। गूघरी गांठ छलसूं छीनी, कँवर आपरी मन भाई कीनी॥

(दोहा)

तल ऊपर ऊपर तलै, राखो किणही रुक्ख॥
कैरी दस ताळा कनैं, दोउँ विध सहसी दुक्ख॥१२०॥
कामपड़्यां पावै कसट, सै अबलां रै संग॥
सुज मरदन खंडन सहै, श्रै मुझ्झताला अंग॥१२१॥

(वात)

रतनांमैं धिटाई प्रगट हुई लाज थी सू भाजी, पायल वीछियां मौन किवी कटमेखला वाजी। छिब मैं छिलिया, हार हमैं लहिलिया। छातियां थहरै, केस छूटा छहरै। कुचां पर फाबी अलकांरी वांकस, कलभरा कुंभां जांणैं मदन महावतराहीज आंकस। सासरै जोर, सिसकरो सोर। मिळती आंखियां अमिळती दीठ, लळकती कड़ियां वळकती पीठ। मां-

ग मोती थरकता, ससिफूल बेणो सरकता। अधरां रंग राचतो, नकमोती नाचतो। पसेव भीनो अंग, वणियो रंग। पीठ पर बेणी उचकती इण भांत निजर आवै है, केळरै पांन जांणें नागण लफ लफ जावै है। उचकती अलकावलमें मुख इण भांत सोभा देवै है, जाणं नागलड़ांरै हींडै चढ पूरणचंद झोटा लेवै है।

(दोहा)

नागणरी बेणी निरख, परतख गुण पळियाह ॥
किताक मुख ग्रहिया किता, चेटल छूट चलियाह।१२२।
पड़े मुकत पण पिलँग पर, सिरसूं झड़ साराह ॥
जांणा अनोखी जुगतसूं, तम उगळै ताराह ॥१२३॥
सुंदररो मुख रत समै, दुति इण स्वेद द्रवंत ॥
कँवळ स्रवै मकरंद सिर, ससिहर सुधा स्रवंत ।१२४।
लफती लुळती लहकती; अलबेलण छिब अच्छ ॥
वालम रसियो वणरह्यो, वेली छयो विरच्छ ॥१२५॥

सोरठा ॥

केळो चंपकळीह, हसिया हिलमिल हेक हुय ॥
रत रस रंग रळीह, अंगां छिल छिल ऊझळै॥१२६॥

(दोहा)

छक छिबरी छोळां छिली, पेलि प्रेमदध पाज ॥
मगर उथेलै डिगमगी, जाणा कि मदन जिहाज १२७
प्रीतम प्यारी परसपर, खुसदिल हेक खमीर ॥
उररी रतनां उर बसी, हियरो हार हमीर ॥ १२८ ॥
आखर उरथी ऊससै, जीभ आय मुड़जाय ॥
कठिण हियो कर इम कहै, वालम वचन दणाय १२९
अडबड़ाट रहियां अठै, दुरस गयांहिज देस ॥
जिकूं हुवै मरजी जिकूं, वायक दीजै वेस ॥ १३० ॥

(रतनां वायक छप्पय)

रहण कह्यां राजनूं दुरस नहि प्रभुता दावै,
हलण कह्यां हित हाण जिका पण सही न जावै॥
मबा दियां मोकलै वणै किम लूखा वायक,
साथ हुवां सांपरत लोकलज रहै न लायक ॥
ऊपजै नहीं उत्तर इसो चितमैं हूं जिण विध चहूं,
आपनूं आप चढतां अवै कहो आप किणविध कहूं १३१-

(दोहा)

साहिब प्रात सिधावसी, जिण विछड़णरै तंत ॥

रै विध! इसड़ी रैण रच, आवै कदे न अंत ॥१३२॥

(वात)

कंजकल्यां विकसण लागी, भँवरावल्यां निकसण लागी। ओस कण वरसण लागा, कुमंद मंद दरसण लागा। चकोरांरै विलाप होण लागा, चकवा चकवियां रै मिलाप होण लागा। चोर उलूक गस्त हूण लागा, तारागण अस्त हूण लागा। गुणियण जिके ललित विभास गावण लागा, पंथी तिके पंथनूं धावण लागा। झेरणांरी झाटां सुणीजण लागी, विद्यार्थियां रै मुख गुणणी गुणीजण लागी। तिमररो जोर हटण लागो, दीपकरो तेज घटण लागो। चिड़ियां चहकण लागी, झालरां ठहकण लागी। इणभांत पगड़ो हूण लागो, जठै प्रेम प्रीतरो झगड़ो हूण लागो ॥

(दोहा)

हियो हुबक गदगद हुवो, पलक्कां नह पलियाह ॥
तूटी मुक्ता लड़ तिसी, आँसूँ ऊझळियाह ॥१३३॥
पांन दरभ वरुणी पलक, मुनिजल आँसूं मार ॥
नेही विछड़त नींदरो, नैणां सकल पनार ॥ १३४ ॥

(चतरू वायक दोहा)

उभई सगपणरो उठै, भल वाणाक भेळोह ॥
चित द्रिढ होसी चंद्रगढ, मुकलावै मेळोह ॥ १३५ ॥

(वात)

चतरू रतनांनै कही थोड़ो साहस तो धरजै, कँवर जीनैं हमैं वेगा विदा करजै । मन नेड़ो है तो तन नेड़ो किसो न रहसी, कांई खबर है घड़ीक फेर घुळगई तो लोक कांई कहसी । कुण किणसूं न्यारा न हुवै है भलां इतरी तो राखो खुसी, आगै मिलाप हुवो है तो फेर किसो न हुसी । इणभांत विदा हुय कँवर बागनूं आयौ, घोड़ां जीण करायौ । अबै अठै रतनां विसूरणा करै है, नैंण जाणैं झरणां झरै है ॥

(रतनां वायक दोहा)

आई घटरी आपदा, घड़ियक काढां घींस ॥
सखी अटा चढ सांभळां, हयँद पनारी हींस ॥१३६॥

(सोरठा)

पसगां चढियो पीव, चित तो डागळियां चढ्यो ॥

जाय उड्यो इम जीव, अस तिम तिम मारग उडै।१३७।

(वात)

कँवररै साथ रतनांरी निजर इणभांत जावै है, भागीरथ लार गंगा होय इसी ओपमा पावै है । वळै कितरीक दूर तांई दूरबीण लगाई, सारांसूं बधती सनेहरी सगाई ॥

(दोहा)

निमखंतर सहता नहीं, दीसण लागा दूर ॥
भाखै इणविध कांमणी, वचन विसूर विसूर॥१३८॥

(सोरठा)

आलीजो असोत, द्रिगां वळैही देखसां ॥
दूरगया दैसोत, नावै रज उडती निजर ॥ १३९ ॥
सखि किम रहै सयाण, दाहक रूपी दरसवै ॥
पावस पीव पयांण, हुवो सकार ककार हिव।१४०।
सागररी तज सीर, मो द्रिग जल लै पीव मग ॥
वरसै वारिद वीर, तो जाणौं लायक तनैं ॥१४१॥
सांभळ समरथ सूर, पवन लियावै पीवसूं ॥
पदरज राखूं पूर, अंजणारी पर आंखियां ॥१४२॥

गाढो पिवरो गात, परस परस मो परसजै ॥
वात सुणै इक वात, पिव मत परसै मो परस १४३

(दोहा)

चुगतां उडतां चालतां, विछड़णरी नह वात ॥
पारेवी धन पीवरै, रहै संग दिन रात ॥ १४४ ॥
उमँड घटा अँधियावणी, वीज छटा छिब छांह ॥
विस जिसड़ी लागै बुरी, निस पावस विण नाह१४५
सरस निहारै दूज ससि, थिरू एकटग थाय ॥
द्रिग बालमरी दीठसूं, जुड़ै दीठ जां जाय ॥१४६॥
प्राण रह्या बस पीवमैं, मिलै न तिय तन मांहि ॥
सूनैं घर भिभमान सम, जमही फिर फिर जांहि१४७

(अथ कँवर बायक सांईनांसूं छप्पय)

विदा हुवो जिण वार मृगानयणी मन मांहै,
मूल रही मुरभाय दही जिम बेली दाहै ।
हद भरि आयो हियो गलो गदगद गहरायो,
हरफ नहीं तिणहूंत उकस मुख बाहर आयो ।
पलकही हेक विछड्यां पछैं नां द्रिग मिलै न नां सुवां,
उर बीच गड्या खटकत अजै वे चख उमड्या आंसुवां

(सांईना वायक दोहा)

रँग निज तियरै राचजै, जिणमैं नह जोखोह ॥
किणनैं लागै कँवरजी, चोरयो गुळ चोखोह ॥१४९॥

[कंवर वायक दोहा]

सवही त्रिया सुहावणी, सरसावणी सदा ॥
ही रसकां दिलरी हरण, वाक्युंहि ओर अदा १५०

(वात)

हमैं कँवर पीळी भींत भेटियोड़ो सु सूरजगढ आ यौ, महलां गयो तठै चित्रलेखा पिण भेद पायौ ।

(चित्रलेखा वायक दोहा)

साभी कपट सिकाररै, जिय कांइ दूजी जोख ॥
अव हूं समभी आपरो, साहब दिलरो सोख॥१५१॥

(कंवर वायक दोहा)

दोस कियौ सो दाखजै, रोस कियो किण रीत ॥
पाण धरां कुच संभु पर, प्यारी मांन प्रतीत ॥१५२॥

(सोरठा)

अरुण हुवा रिस आग, गाल कनक गोरा गजब ॥
म्हैं जो दूजे माग, तिके चढावो जीभरै ॥१५३॥

(अथ कँबररी स्मरणदशागीत जात सपंखरो)

घणां रंगमैं घुमंडी इतै उमंडी मेहरी घटा,
धरै रीत उलटी नेहरी करै धंक ।
सो तचकै हार कुचां उमंडै देहरी सोभा,
लचकै मचकै झीणो केहरी सो लंक ॥१५४॥
महा आणँदसूं पंछी डहैकै गहैकै मोर,
खाटसौ चहैकै वणौ इसे रूप खेल ।
सामीररी भूल पटां महैकै वे जेण समैं,
बृच्छ धू लहैकै जाणौं चामीररी वेल ॥ १५५ ॥
स्रवंती प्रसेव बूंद प्रीत लता सींचवारी,
चित्त खींचवारी चखां अमेलरा चोज,
जांणवा लगीसी अंग भींचवारी सारी जोख ।
मांणवा लगीसी हींड हींचवारी मोज ।१५६।
पीठ आ त्रिवेणी रंग राच रह्यो प्रभा पूर,
पत्र केल माचरह्यो प्रेमसूं पनंग ॥१५७॥
कोक कला कृत्य सो विनोद वाच रह्यो किनां,
आछै मोद नाच रह्यौ नृत्य सो अनंग ।
लोभांणी नवोढ नेहनै सारा कचोळा लेती,

भासै अंग अचोळा सचोळा लेती भाव ।
करां मक्रकेतरै लचोळा लेती तूज किनां,
नक्रैर मचोळांसूं हचोळा लेती नाव ॥१५८॥
जाभ्की रूस लूटियो विलास च्यारूं जाम रोस,
पुंज अली नामरौ सपूतली पाखाण ।
भूलां चद्रगांमरौ न धामरौ वाखाण भूलां,
वामरो न भूलां भूलां कामरो वाखाण ॥ १५९ ॥

अथ कँवररी पत्री ॥

सिधश्री लगनरी लड़ी, जीवरी जड़ी । सजीली फबीली, लजीली, छबीली, बंकीली, रमकीली, लंकीली, झमकीली, छकीली, लटकीली, चमकीली, चटकीली, बतीस लछणी, चोसट कला विचच्छणी, केळ रस क्याणी, प्राणप्यारी, जिणसूं मांहरो निज नेह, दुरस भांत राखजो देह ॥

(दोहा)

रह्या दूर नेड़ा रह्या, तूं सर तूंहिज त्राण ॥
सुध तो आयां जाय सुध, प्यारी जीवन प्राण १६०
म्हे थांरी हद मांनसां, प्यारी आंहिज पेस ॥

रूड़ा जतनां राखजो, म्हाळी वसत विसेस ॥१६१॥
संदेसां कहतां सनस, जे न लिख्या पत्राजांहि ॥
प्यारी निज हिय पूछजो, म्हां रै जो हिय मांहि॥१६२

अथ रतनांरी पत्री ॥

सिधश्री सूरजगढ सुथान, महा सुभ ओपमा विराजमान, सिररा सेहरा, हियरा हार, आंख्यांरा अंजन, आतमरा आधार, गुणांरा गंभीर, उकतांरा आगर, बोहोतर कला बिचित्र, सुबुधरा सागर, प्रभातरा प्रभाकर, भँवर आलीजारा भूप, गंधरा गेंद गुलाब, नेहरा नायक, रंग रंगीला, केसर क्यारा, छोगाळा, छबीला, प्राण प्यारा, सोभारा सिणगार, सेणांरा सुख दायक, श्री श्री १०८ श्री कँवरजी साहिब रसिया, वालम! चद्रगढसूं सदा हुकमी खिदमतगार बांदीरो मुजरो मालुम, आलीजा अलबेला अंगांरा उधार, आपरा डीलां सारी मुदार ॥

(दोहा)

अप्रंच लिखिया आपरा, खुस वे दसकत खास ॥
वाचत आणँद वरसिया, वसिया हिवड़ै वास १६३

जिय जाणो भुगतै जिको, जीहां कही न जांहि ॥
पिव ज्यूं गूंगा पारसी, मनरी मनरै मांहि ॥१६४॥
हुवो जोक केहर हुवो, हुवो स्वान फिर हाय ॥
हिव हमाउ चाहत हुवो, वालम विरह बलाय १६५
हर जिणसूं दाणव हण्या, जिकण विखम जुर जाय॥
विरह मिटावण वालमा, अब ऊ दीजै आय।१६६।
मोहि पिया अबकै मिलो, पलक न छोडूं पास ॥
रेम रोममैं रमरहूं, ज्यौं फूलनमैं वास॥१६७॥
सुकै तन जाय न सही, विरहां घाम बलाय ॥
वालम सुरभी वेलनूं, अब रस सींचो आय।१६८।

अथ रतनांरो बिरह दोहा॥

आली उड गण नांहिं अै, अवस विरहरी आग ॥
चली स्वास मुक्ता चिणग, लखौ रही नभ लाग१६९
रितु आई रितुराजरी, अलियल पूरण आस ॥
कामण जीवै विध कवण, विण वालम विसवास१७०
चैत्र मासरी चांदणी, सरस वधी सँग सोम ॥
जाण आज खुस जाय नह, लोमस रिखरा लोम१७१
परस्त नहीं फिर पाहुणां, अै निरधूम अँगार ॥

चल सखि जाय पलास चढि, भूनां तन अंगार१७२
विरह विथा झल झपट विच, सह जळगयो शरीर॥
जाणी परत न किण जुगत, नैणां निसरत नीर१७३
हेली पिव बिछड़त हियो, वज्र हुवो वरजोर ॥
घणी सही घणारी घमक, कड़क्यो नहीं कठोर१७४

अथ कँवररो विरह दोहा

हार जिके गिरसा हुता, जिण दिन जठै जरूर ॥
सहियां बिच अब सांपरत, गिर केइ बडा गरूर१७५
द्रिग तो फरकण दाहणां, मिलै रतन जो मूझ ॥
मूंद वाम द्रिग मेलसूं, तद तिण सांमो तूझ।१७६।
भुजतो फरकण भांमणां, धण मेलण गुण धन्न ॥
वाम भुजा तज्ञ वामरो, सोसौं भीड़ां तन्न ॥१७७॥

(वात)

इद्रभांणरो समाचार आयो जैतमालरा व्यावरो हाथ कांम लियो है, सो लिखमीदासरी वहूनें आणो तेयार कियो है। तद हीरालाल मोतीलाल पाछो लिखियो लिखमीदासजी पिंडांईज आवै, सो मुकलावारो पण दस्तूर साज जावै। हमैं औ घररा

तो मुकलावारो घाट घड़ै है. नैं रतनांरो ज्यौं ज्यौं हियो भरै है। तद चतरू दिलासा दिवी, इसी सला किवी। जो लाछां धायरी बेटी इमरती वचनमैं आय जाय, तो काम पड़्यां एवजपणो पाय जाय। सासरै रहणरो तो काम दिन दस१०ही पड़ै नीठ, जठै नख चख ही थांरो न पड़ै दीठ। पिण इणमैं एक अड़ै है, एकणरै तांई सारांसूं तोड़णी पड़ै है।

(रतनां बाधक दोहा)

स्वात श्रवत वाहिज सुखद, एको बूंद अमंद ॥
मिल सूकौ चात्रक मतै, सर सरता र समंद ॥१७८॥

(सोरठा)

जिण ससि लख जीजेह, तिण विण अंगीरा तकै॥
त्रपत नही तीजेह, दुवही रुचै चकोर दिल ॥१७९॥

(वात)

रतनां इमरतीसूं भांत भांत पक्की किवी, भिन भिन वाकब कर दिवी। भांत भांतरी खुराकां चढाई, सुवानैं पढावै इण भांत पढाई। हमैं इतरै लिखमीदास आयौ सु रतनां घणी उणमणी रहै, पण

लजाळूपणांमें पड़दो वहै । इमैं सखियां मिल रतन नूं सिणगार राखीहै, सो जाणौं सोरमैं चिणगार नाखी है । चतरू पण इमरतीनैं वणाई, जिणमैं सागे रतनांरी नकल अणाई । हमैं रातरा लिखमीदास महलां आयौ, सहेल्यां जाय चोगिरद छायौ । तठै सारी ही भांत भांत कहनैं रही, पिण रतनां तो ला जहीज गहनैं रही ॥

चौपाई ॥

झख झख सारधां जीभ घसै है,
छँदगाळी बोले न हसै है ।
ऊठो आई आधी रात,
आपां छतां करै नहि वात ॥१८०॥
यूं कर सगळी बाहर आई,
तद रतनां कीधी चतुराई ।
मिसकर उठी लगायर फिड़की,
आऊं देख दियाऊं खिड़की ॥१८१॥
रतनां गई इमरती आई,
लिखमीदास खबर नहि पाई ।

(वात)

हमैं हीरानंद रतनां लिखमीदासनूं विदा दिवी, ओढणारी घणी जीनत किवी । हमैं रतनां वाहेली चंद्रावती जूनैं चंद्रगढ रहै तठै इमरतीनूं मेली, आगै खबर देणारो तो मिस नैं हिकमत खेली । हमैं विद्वा होय जूनैं चंद्रगढ आवै है, जठै चतरू जाय लिखमीदासनूं वतळावै है । म्हांनूं बाई चद्रावतीसूं मिळणारी दवायती दीजै, आप अठै वागमैं हवा कीजै । हमैं रतनां जाय चंद्रावतीसूं मिल सारी खोली, जठै चंद्रावती इसी भांत बोली ॥

(दोहा)

अवगुण आछा पण अवस, धीरा गुण घणनूं ॥
गहली फोड़ न गागरी, घुमड़्यो लख घणनूं ।१८२।

[रतनां वायक दोहा]

परतख पाय पटंतरो, वैनड़ सुण बोली ॥
जीहां चाखी दाख जिण, न रुचै नीबोली ॥१८३॥
जतन कियां कोड़क जिको, कहि गहि काढै कूंण ॥
हिव मनपिव छिवभय हुवो, लख जळ मिलियो लूंण१८४

(बात)

हमैं चतरू रतनांनूं कही थारै एवज इमरती नैं वणायर लेजाऊं हूं, सो चित्रगढ पोहोंचाय कोई वा हनो लगाय थांकनैं बेगी आऊंहूं । हमैं आ तो एक दिन ही रही नीठ अठै, चतरू पूठी आवै जितरो खटाव कठै । वाहिलीरा खावंदरो घोड़ो नैं उणारी ही सिलै, रतनां लगावै है इणभांत जिलै । मोजा सूथण गदलौ दसतान, टोप घटाटोप सजिया मसतान । इणभांत मरदभेस कर हाथमैं बरछी झाली, घोड़ै चढ एकली ही हाली ॥

(दोहा)

वाट अरध निसमैं वहै, भूत न जिणारै भाय ॥
पूछै पेंड चुड़ैल प्रत, जिण प्रीतम हित जाय।१८५।

(बात)

घोड़ो इसो तातो खड़ियो, दिन ऊगै रंगवाग निजर पड़ियो । उठै मालण फूलां इणरै नैड़ी आई, तिणनूं रतनां वतलाई । कह्यो म्हारो इतरो काम कीजै, सुखजी खवास म्हारो धरम भाई है जिणनूं म्हां

आयांरी खबर दीजै। म्हारो नाम नथकरण कहणो, इण संदेसारा इनाममैं. तूं कहसी सु घड़ाय देसूं गहणो। तद फूलां कही पागड़ो छांड मांह आईजे, घड़ीक विसराम पाईजै। इतरो कांई अंदेसो, सारोही मरजी प्रमाण कर आऊं संदेसो। हमैं रतनां अठै तक दुराव करै है, हालती थकी जीवणो पग पहली धरै है। हमैं रतनां वागमैं रही, फूलां जाय सुखा खवासनूं हकीकत कही। सुणतांही सुखो वागमैं आयौ, देखतांई हिये हरष छायौ। कयो प्राणसा देवळ डिगतांनूं अधारजै, मांय सितावी पधारजै। इण भांत रतनां हमीरसूं जायर मिली, जाणैं सारिता समंदसूं आय मिली। जिके सोधे था निध अंजणरी जड़ी, जिणां रै सांगै ही निध आय हुई हाजर खड़ी।

(दोहा)

जे चेतन किणविध तजै, मनज्यां वसियो मोह ॥
चुंबकसूं जायर चिपै, लखो अचेतन लोह ॥१८६॥

(वात)

जिणभांत सूरज नैं धूप, इणभांत लगनरो नैं पर

ब्रह्मरो एक ही रूप। लागरी सोभा हाथी चढै जिसी, लाग विना तिके पाला समान त्यांरी गिणत किसी। बावन तोळा ज्यूं मन गुण विचारी ही बात छती, पण जिणमें लाग जिकी तो पावहीज रती। चितरी आंख जो जीभ पावै, तो लागरी बात कहणमें आवै। लाग जिका तो खांडारी धारसूं कांई घटै, जिणमें कट्या हुवै जिकेहीज कटै। कांई धाया र कांई भूखा, लाग विना साराही लागै लूखा। जिण किण दिलरी लाग, दबी न रहै ज्यौं सोरमें आग॥

(दोहा)

विण दीठां सुणियां विगर, समझ सकै किम सार॥
कूप भेक जांणै किसूं, बारिधरो विस्तार ॥१८७॥
ओछा नररा उदरमें, रस किम पूर रहंत ॥
सागरवाळो सलिल सुण, गागर केम गहंत॥१८८॥
कृपण चिंता हितरी कथा, कही न ठहरै कांन ॥
कनक पात्र विण झलत किम, नारी दूध निदान१८९
कठिण निभावण नेह कहि, करतां कठिण न कांय॥
भंगी सोहरी भच्छतां, मुसकल लहरां मांय ॥१९०॥

अगम पंथ इण इसकरै, निभै ठाकुरी नांह ॥
डग ग्वालणियां डोलियौ, सुर पुरपत ब्रज मांह१९१
जो हित प्रथम न जोड़ियौ, जोड़ न तोड़ै जांहि ॥
जोड़ण तोड़णमैं तुरत, गुणगण गांठ गमांहि॥१६२॥
जाणौं रस अनरस न जे, गुणौ प्रेमरी गाथ ॥
विच्छू मंत्र न जाणही, हुलस गहै अहि हाथ १६३
कपटी परतिय सँग करै, परहर निज तिय प्रीत ॥
घररा जिके न घाटरा, रजक स्वानरी रीत॥१६४॥
तज निजतिय परतिय तकै, हिय कर रसकां होड॥
नह आवै हंसां नकल, डग निज भूलै डोड॥१९५॥
वात मुदो सरधा विगर, लागै लंपट लेस ॥
डहक न चित्त डुलावजौ, ओ इणमैं उपदेस।१९६।
अवस पदारथ एकसूं, वधै जठै रुच वेस ॥
कपट रहित हित कीजियौ, ओ इणमैं उपदेस१९७
वात नेहरी वरतियो, दिल अपणायत मांहि ॥
कूप छांह जिम कूपसूं, निकसत बाहर नांहि।१९८।
रतरस मतरस रागरस, परतख नह पायाह ॥
अहळ जमारै मिनख वह, इकरथ ही आयाह१९९

विसयी मिळ गहसी विसय, हस रहसी हसियाह
कवियरा कहसी कविकला, रस लेसी रसियाह२०
सहज प्रमाणै सांपरत, लखौ एक सर लीन ॥
मुकता चुगसी हंस मिल, मिल बक चुगसी मीन२०
प्रिया सुमत सोइ पदमणी, प्रेम पुरस सोइ पीव
मथणहार काढ्यौ मथै, घुळियौ गोरस घीव ॥२०

इति श्रीरतनां हम्मीररी वात संपूर्णः ॥